विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मल्टीमिडिया शैक्षिक कार्यक्रम के प्रभाव का अध्यन

डॉ.हार्दिक डी. मेहता
प्राधान आचार्य एवं एसोसीऐट प्रोफेसर
नीलकंठ एम.एड कोलेज,विसनगर

1. प्रस्तावना

शिक्षण प्रक्रिया में मल्टीमिडिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका मानी गयी है, कुशल अध्यापक शिक्षण को रोचक ढंग से संपन्न करने तथा निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति के लिये विभिन्न प्रकार के मल्टीमिडिया का प्रयोग करते है तथा कठिन से कठिन अवधारणा को आसानी से समजा लेते है इससे कक्षागत शिक्षक-छात्र अन्तःक्रिया में सुधार होता है पूर्व अध्ययनों में मल्टीमिडिया की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है, कपाडिया ए.एम. (1992) के अनुसार 77 प्रतिशत छात्रों ने कहा कि टेलीविज़न का माध्यम स्वशिक्षण को प्रोत्साहित करता है मोहन्ती, पि.सी. (1888) के अनुसार छात्रों की उपस्थिति में वृद्धि हुई है रोज, एन्टोनी, स्टेल बी. (1992) रेडियो प्रोग्राम का प्रभाव नहीं पड़ा ।

उक्त अध्ययनों के निष्कर्षों में मल्टीमिडिया की प्रभावशीलता के परिणामों में भिन्नता पाई गई है अतःकुछ शोध प्रश्नों को हल करने हेतु यह अवस्य सार्थक होगा जैसे बच्चों की शिक्षण उपलब्धि पर मल्टीमिडिया के साधनों के प्रयोग का प्रभाव ।

2. उद्देश्य

१. शासकीय एवं अशासकीय शालाओं में विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मल्टीमिडिया शैक्षिक कार्यक्रम की प्रभावशीलता का अध्ययन करना ।
२. अध्ययन प्रक्रिया में मल्टीमिडिया का अधिक एवं कम उपयोग करने वाले विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।

3. अध्ययन का उद्देश्य

१. विधार्थियों द्वारा शाला एवं शाला के बाहर मल्टीमिडिया साधनों के उपयोग को ज्ञात करना।
२. शिक्षकों की प्रशिक्षण स्थिति का पता लगाना ।

३. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर बहुआयामी शैक्षिक उपागम की प्रभावशीलता का अध्ययन करना ।

4. परिकल्पनाए

Ho_1 शासकीय एवं अशासकीय शालाओं के विधार्थियों में अध्ययन प्रक्रिया में मल्टीमिडिया के प्रयोग संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा।

Ho_2 शासकीय एवं अशासकीय विधालयों के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा ।

Ho_3 अध्ययन में मल्टीमिडिया का अधिक एवं कम उपयोग करने वाले विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा ।

5. न्यादर्श एवं परिसीमन

इस शोध कार्य में मेहसाना जिल्ले में शासकीय एवं अशासकीय 2-2 उपलब्धि का चयन दैव न्यादर्श के आधार पर किया गया है जिससे कक्षा ०९ वि में अश्ययनरत ८० विधार्थियों का चयन कर न्यादर्श के रूप में लिया गया है मल्टीमिडिया शैक्षिक कार्यक्रम की प्रभावशीलता जानने हेतु 20 शिक्षकों एवं 4 प्रधान पाठको का चयन किया गया ।

6. शोध उपकरण

१. मल्टीमिडिया शैक्षिक उपागम प्रभावशीलता प्रश्नावली- स्वनिर्मित प्रश्नावली में कक्षा शिक्षण प्रक्रिया में मल्टीमिडिया साधनों का प्रयोग, उपलब्धा संबंधी कथन सम्मिलित है ।

२. शैक्षिक उपलब्धि परिक्षण-प्रस्तुत अध्ययन में कक्षा 10 वी के विज्ञान विषयों पर आधारित स्वनिर्मित शैक्षिक उप्लब्धि परिक्षण का उपयोग किया है जिसमे कुल अंक 40 है ।

7. शोध प्रक्रिया

चयनित विधालयों में विधार्थियों पर शिक्षकों की सहभागिता से प्रश्नावली द्वारा मूल्यांकन कर प्राप्त प्रदतों का सांख्यिकिय विश्लेषण से महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त किये गये इसी प्रकार विषय से संबंधित शिक्षकों से भी साक्षत्कार प्रपत्र भरवाकर विश्लेषण किया गया ।

सारणी क्र. 01 सांख्यिकिय विश्लेषण

School	(Students) N	Mean	S.D	S.E	"t"	परिणाम
Govt.	40	139.08	26.59	6.17	3.26	0.01 स्तर सार्थक है
Private	40	159.16	30.47			

सारणी क्र. 02 सांख्यिकिय विश्लेषण

School	(Students) N	Mean	S.D	S.E	"t"	परिणाम
Govt.	40	22.53	7.01	1.4	0.96	0.05 स्तर सार्थक नहीं है
Private	40	21.23	7.00			

8. शोध परिणाम एवं निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम तथा निष्कर्ष निम्नलिखित प्राप्त हुये है –

- **शासकीय एवं अशासकीय शालाओं के विधार्थियों में अध्ययन प्रक्रिया में मल्टीमिडिया के प्रयोग संबंधी अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा ।**

उक्त परिकल्पना के सार्थकता की जांच हेतु क्रांतिक अनुपात परिक्षण किया गया ।

उक्त सारणी क्रमांक -1 के परिणामों के निरीक्षक से पता चलता है की 0.01 सार्थकता स्तर पर का मान ३.२६ है, जिससे यह ज्ञात होता है की सार्थक अंतर पाया गया है एवं परिकल्पना अस्वीकृत हुई । परिणाम स्वरूप अशासकीय विधालयों के विधार्थियों की मल्टीमिडिया प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक पाई गई ।

- **शासकीय एवं अशासकीय विधालयों के की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा उक्त परिकल्पना के सार्थकता की जांच हेतु क्रांतिक अनुपात "t" परिक्षण किया गया l**

उक्त सारणी क्रमांक- 2 के परिणामों के निरिक्षण से पता चलता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर का मान 0.094 है, जिससे यह ज्ञात होता है की सार्थक अंतर पाया गया है एवं परिकल्पना स्वीकृत हुई ।

LEVEL	(STUDENTS) N	MEAN	S.D	$S.E._D$	"t"	परिणाम
Govt.	40	26.54	7.51	1.80	2.95	0.01 स्तर सार्थक है
Private	40	21.26	6.45			

परिणाम स्वरूप शासकीय एवं अशासकीय विधालयों के विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया लगभग सामान स्तर की शैक्षिक उपलब्धि है ।

- **अध्ययन में मल्टीमिडिया का अधिक एवं कम उपयोग करने वाले विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं होगा**

उक्त परिकल्पना की सार्थकता की जांच हेतु क्रांतिक अनुपात परिक्षण किया गया ।

उक्त सारणी क्रमांक-3 के परिणामों के निरिक्षण से पता चलता है की 0.01 सार्थकता स्तर पर का मान 2.95 है, जिससे यह ज्ञात होता है की सार्थक अंतर नहीं पाया गया है एवं परिकल्पना अस्वीकृत हुई । परिणाम स्वरूप अध्ययन में मल्टीमिडिया का अधिक उपयोग करने वाले विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पाई गई।

9. निष्कर्ष एवं व्याख्या

१. अशासकीय शालाओं के विधार्थी मल्टीमिडिया के प्रयोग के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक पाई गई ।
२. शासकीय एवं अशासकीय शालाओं में बच्चो की शैक्षिक उपलब्धि में समानता है अर्थात् अशासकीय शालाओं में मल्टीमिडिया के प्रयोग संबंधी अभिवृत्ति सकारात्मक होने पर भी दोनों शालाओं में बच्चो की उपलब्धि सामान है (पुष्टि–रेडियो कार्यक्रम के प्रभाव का प्रायोगिक एवं नियंत्रित समूह में प्रभाव पाया गया मोहन्ती एस.के.1990)।
३. अध्ययन में मल्टीमिडिया का अधिक उपयोग करने वाले विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाई गई (पुष्टि शिक्षण निति प्रभावशाली है रोज, एन्टोनी, स्टेला बी. 1992)।

10. शैक्षिक महत्त्व

शिक्षक अध्ययन प्रक्रिया में मल्टीमिडिया के साधनों का प्रयोग करे बच्चे मल्टीमिडिया साधनों का प्रयोग करेंगे जिससे स्वअध्ययन की आदत उत्पन्न होगी और नई तकनीक का ज्ञान होगा।

11. सुजाव

बच्चों को व्यक्तिगत रूप से कम्प्यूटर पर इंटरनेट पर विषय की जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिले । इस प्रकार इस शोध अध्ययन से यह निष्कर्ष निकालता है की मल्टीमिडिया शैक्षिक कार्यक्रम का विधार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है द्रश्य-श्रव्य सामग्री (मल्टीमिडिया उपागम) विधार्थियों के मस्तिक पर अवधारणाओं की सहजता से सिखाने में सहायता करती है तथा उनकी सृजनात्मक कल्पनाओं को भी जागृत कराती है जिनसे उनके अधिगम स्तर में वांछित सुधार होता है ।

संदर्भग्रंथ

1. अनुराधा, के. (1991). "चिल्ड्रन्स टेलीविज़न विविंग बिहैवियर एण्ड ईड्स इफेक्ट ओन पर्सनल एण्ड एजुकेशन डेवलपमेंट" श्री वेंकटेश्वर यूनिवर्सिटी, एम.फिल., होम साइंस इन फिफ्थ सर्वे ऑफ़ एजुकेशन रिसर्च VALUME II, NCERT पृ.सं. 1960.
2. भटनागर, ए. बी. भटनागर, मिनाक्षी (2004). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आर.लाल बुक डिपो, पृ.सं. 7-22, 35-75.
3. कुलश्रेष्ठ, एस.पी.(2006)."शैक्षिक तकनिकी के मूल आधार, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा-2, पृ.सं. 113-145, 191-226.
4. मोहन्ती, एम.के. (1990)."ए.क्रिटिकल अप्रेसल ऑफ़ प्राइमरी स्कुल रेडियो प्रोग्राम्स एण्ड वेयर इफेकटीवनेस फॉर प्यूपिल्स ग्रोथ" उत्कल यूनिवर्सिटी, पी-एव.दी. इन एजुकेशन इन फिप्थ सर्वे ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च VOLUME II, NCERT पृ.सं. 1381
5. कपिल, एच.के. (2005). अनुसंधान विधिया, एच.पी. भार्गव बुक हॉउस, पृ.सं. 37-50.